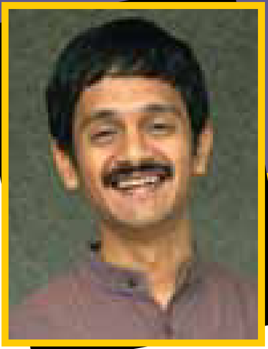

07 'नवाचार' एक शिक्षक के नाते

ऋषिकेश बी.एस.

यह लगभग 15 साल पहले की बात है जब मैं इस 'समूह' का सदस्य था – ऐसे मानवों की प्रजाति जिन्हें वह काम बड़ा अच्छा लगता था जो वे अपनी आजीविका के लिए करते आए थे, जबकि कॅरिअर की दृष्टि से वह बड़ा ही अनिश्चित और पैसे की दृष्टि से बड़ा ही कृपण था! बहरहाल, इस समूह के हर सदस्य में एक खासियत साझा थी – कक्षा की चारदीवारी में विद्यार्थियों के साथ संवाद करने के दौरान मिलने वाला आनन्द। विद्यार्थियों के साथ इस परस्पर–संवाद के दौरान हम उस खास विषय की पड़ताल कर रहे होते जिसके हम 'एक्सपर्ट' माने जाते थे। लेकिन सामान्य टीचर भी तो यही सब करते हैं तो फिर भला क्यों मैं अपने समूह को उन अध्यापकों से अलग करके देख रहा हूँ? यह सही है कि हम भी कुछ काम ऐसे करते थे जो एक आम अध्यापक करता है। मिसाल के लिए, हम भी अपने विद्यार्थियों को एक अध्यापन–अध्ययन ढाँचे में रमाए रखते थे, लेकिन 'शिक्षक' होने के अलावा हम और भी 'कुछ' थे। हमारे 'और भी कुछ' होने के कई कारणों में से तीन प्रमुख थे। एक तो जब भी हम विद्यार्थियों के किसी समूह के साथ चर्चा करते तो इस बात की सम्भावना हमेशा और अच्छी–खासी बनी रहती कि कक्षा के वातावरण में उनसे बात करने का हमारा वह पहला व अन्तिम मौका साबित हो सकता था। यानी हम यदि सफल होना चाहते थे तो हमारे पास सिर्फ वही एक घण्टा या उससे भी कुछ कम समय था जिसमें हम बच्चों पर किसी भी तरह का स्थायी प्रभाव छोड़ सकते थे, जबकि एक आम शिक्षक के पास कम–से–कम एक साल तो रहता ही है, कहीं किसी भी तरह की भरपाई करने के हिसाब से। दूसरे, शिक्षक, पाठ्य–पुस्तक को अपने खास औजार के बतौर इस्तेमाल करते हैं जबकि हमारे पास ले–दे के उस दिन का अखबार ही रहता था अपने काम में लाने के लिए (हाँ, यह बात जरूर है कि हमारा यह हथियार नित नए रूप धारण करता था)। और तीसरे, तमाम आम स्कूली शिक्षकों के पास अपने–अपने विषय सम्बन्धी संसाधन होते हैं, जबकि हमारी उस 'टोली' के हर सदस्य के पास वही एक संसाधन (दैनिक समाचारपत्र) होता था, फिर चाहे हम भौतिकी पढ़ा रहे हों या जैविकी या फिर संगीत, रंगमंच, इतिहास या कुछ भी।

जिस समूह की मैं बात कर रहा हूँ वह 'एन.आई.ई. कंसल्टण्ट्स' के नाम से लोकप्रिय है जहाँ इन प्रथमाक्षरों का विस्तार है यह वाक्यांश 'न्यूजपेपर इन एज्यूकेशन (अखबार के जरिए पढ़ाई)'। एन.आई.ई. के सलाहकार देश के सभी प्रमुख शहरों में हैं और कई राष्ट्रीय अखबार उनकी सेवाएँ लेते हैं। तरीका एकदम सीधा–सादा है – किसी समाचारपत्र के साथ एन.आई.ई. विशेषज्ञ के बतौर जुड़ते ही उस व्यक्ति को हर सप्ताहान्त उन स्कूलों की एक सूची दी जाती है जिन स्कूलों में उसे अगले हफ्ते जाना है। इस सूची में मुख्यत: विभिन्न प्रकार के प्राइवेट स्कूल होते हैं और कुछेक शहरों में तो केन्द्रीय विद्यालयों (के.वी.) के भी नाम होते हैं।

विशेषज्ञ का काम है, इन स्कूलों में जाकर विद्यार्थियों के साथ कक्षा–आधारित सत्र करना। ये सत्र कक्षावार होते हैं और एक विशेषज्ञ को कक्षा एक से कक्षा बारह तक कोई भी कक्षा की जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। देश के सभी प्रमुख शहरों में अधिकांश राष्ट्रीय अखबार आज एन.आई.ई. कार्यक्रम से जुड़े हैं। अस्सी के दशक की शुरुआत में में न्यूयॉर्क टाइम्स द्वारा किए गए एक नवाचारी प्रयोग से इस अद्भुत कार्यक्रम की शुरुआत हुई थी। फिर

उस दशक का अन्त आते–आते टाइम्स ऑफ इण्डिया के तत्वावधान में यह कार्यक्रम भारत भी आ पहुँचा। जल्द ही द हिन्दू व डेक्कन हेराल्ड जैसे देश के अन्य बड़े अखबारों ने भी इसे अपना लिया। जब भी कोई स्कूल एन.आई.ई. कार्यक्रम से जुड़ता है तो वही तय करता है कि उसकी कौन–सी कक्षाएँ कार्यक्रम का हिस्सा होंगी। हर स्कूल का अपना तर्क होता है जिसके आधार पर वह कक्षाएँ चुनता है। उदाहरण के लिए के.वी. के लिए कक्षा ग्यारह व कक्षा बारह इस कार्यक्रम का हिस्सा होती थीं क्योंकि उनका मानना था कि अनेकानेक विषयों पर एक 'विश्व दृष्टि' व विविध प्रकार के परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करने वाला यह कार्यक्रम उनके किशोर बच्चों के लिए कहीं ज्यादा लाभदायक होगा। दूसरी ओर, कुछ अन्य स्कूलों की नजर में यह कार्यक्रम, उनकी निम्नतर प्राथमिक कक्षाओं के लिए ठीक न होकर, उनकी उच्चतर प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों के लिए बेहतर होता। जबकि ऐसे भी स्कूल थे जो यह सोचते थे कि इस तरह का कार्यक्रम, प्रारम्भिक (एलिमेण्टरी) स्तर की सभी कक्षाओं के लिए तो उपयोगी होगा लेकिन बड़ी कक्षाओं के लिए नहीं। कई स्कूलों की सोच में हाईस्कूल की कक्षाओं को इस तरह के कार्यक्रमों के साथ जोड़ना बिलकुल भी अच्छा न होता, क्योंकि उनके हिसाब से इन कक्षाओं के बच्चे अपनी आने वाली बोर्ड की परीक्षाओं के लिए तैयारी में लगे रहते हैं और उनकी यह एकाग्रता बिलकुल भी भंग नहीं की जानी चाहिए। यह तो साफ था कि ये स्कूल, एन.आई.ई. कार्यक्रम को एक पाठ्येतर विविधा के बतौर देख रहे थे।

लेकिन ऐसे स्कूल बहुत थे जिन्हें यह कार्यक्रम, अपने विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की उनकी योजना से एकदम मेल खाता लगता था। जहाँ तक एन.आई.ई. विशेषज्ञों की बात है तो इस सारी विविधता का मतलब था नाना प्रकार के स्कूली परिवेश में तरह–तरह के विद्यार्थियों के साथ जुड़ने का अवसर। यह सब एक चुनौती भी देता था तो एक रोमांच भी। मैं बंगलौर में इस 'विशेषज्ञ सलाहकार' समूह का एक सदस्य था और उन चार सालों में जब मैं इस कार्यक्रम का हिस्सा था, मुझे 100 से भी ज्यादा स्कूलों के कक्षा एक से लेकर कक्षा बारह तक के बच्चों के साथ काम करने का मौका मिला। चार सालों के दौरान हर रोज विद्यार्थियों के साथ संवाद करने के अनुभव और कक्षा से मिले रोमांचक अनुभवों तथा हर कक्षा से पहले लगने वाली तैयारी की स्मृति के सहारे ही मैं यह लेख लिख रहा हूँ। मैं कोशिश करूँगा कि क्लास में लगने वाली तैयारी को आपके साथ बाँटते हुए बताऊँ कि कक्षा के पहले की गई यह सारी तैयारी कैसे उस कक्षा की चारदीवारी के भीतर अपने रंग में आती थी। उम्मीद करता हूँ कि इस सारी जद्दोजहद में मैं उन लोगों को अपने इन तजुर्बों का कुछ अहसास करा पाऊँ जो पढ़ाने की इस विधि को आजमाना चाहते हैं।

अधिकांश एन.आई.ई. विशेषज्ञों के दिन की शुरुआत उस दिन के समाचारपत्रों के विस्तृत अवलोकन और ऐसे समाचारों, प्रसंगों के चयन से होती है जिन्हें उस दिन के लिए टी.एल.एम. सामग्री के बतौर इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके बाद, स्कूल सूची देखकर यह पता लगाया जाता है कि कौन–कौन–से स्कूल व उन स्कूलों की कौन–कौन–सी कक्षाएँ उस दिन पढ़ाने के लिए निर्धारित की गई हैं। इसके बाद, डायरी या याददाश्त के आधार पर यह देखा जाता है कि वे स्कूल या कक्षाएँ पढ़ाने के लिए

उन्हें पहली बार मिली हैं या पहले भी कभी मिल चुकी हैं। इसी के आधार पर, एन.आई.ई. विशेषज्ञ को अपना 'सुबह का फटाफट होमवर्क' करना पड़ता है जिसमें कक्षा की पाठ्यचर्या व उनकी योग्यता के हिसाब से समाचार पत्र में दिए गए समाचारों का चयन किया जाता है। इसका एक उदाहरण देना यहाँ ठीक होगा : इन दिनों अन्तर्राष्ट्रीय समाचारों में मिस्र की राजनैतिक खलबली छाई हुई है। मान लीजिए कि दिन विशेष के अखबार की प्रमुख खबर मिस्र को लेकर ही है और उसके केन्द्र में राष्ट्रपति मोर्सी द्वारा निरंकुश सत्ता पाने की कोशिशों का हवाला है, और उस दिन की समय सारणी के अनुसार उच्चतर प्राथमिक कक्षाओं में से किसी एक कक्षा के साथ बातचीत होना है, ऐसे में मेरे जैसे इतिहास के विशेषज्ञ की स्वाभाविक रुचि विद्यार्थियों को प्राचीन मिस्र की 'यात्रा' कराना होता! 'सामान्य युग (कॉमन इरा)' से पहले कई हजार सालों तक मिस्र और उसके आसपास के क्षेत्रों पर फरूनों (फैरो – प्राचीन मिस्र में राजवंश के शासकों की उपाधि) के शासन का सन्दर्भ, राष्ट्रपति के फतवे के खिलाफ मिस्र में हो रहे मौजूदा विद्रोह से उस प्राचीन काल की तुलना और फिर वर्तमान में प्रचलित राजनैतिक आदर्शों पर विद्यार्थियों के साथ चर्चा करना, मेरी योजना में शामिल होते। लेकिन, अपनी कार्ययोजना को लचीला रखना भी बहुत महत्वपूर्ण होता है, कारण कि कई बार एन.आई.ई. विशेषज्ञ को पता नहीं होता कि विषयवस्तु को किस हद तक फैलाया जाए। हाँ, आगे चलकर, दोबारा मुलाकातों के चलते यह समस्या जरूर हल हो जाती है क्योंकि तब हमें इस बात का अच्छा–खासा अनुमान हो जाता है कि स्कूल विशेष के बच्चों को किस स्तर के वार्तालाप में रमाए रखा जा सकता है।

मेरा अपना अनुभव कहता है कि विद्यार्थियों के साथ हमारे वार्तालाप का स्तर, कक्षा के स्तर की बजाय अमूमन शाला के स्तर के अनुसार ही रखा जाना चाहिए। दिलचस्प बात तो यह है कि कई बार बड़े जतन से बनाई गई हमारी योजना खटाई में पड़ जाती है; कभी–कभी थोड़ी–थोड़ी, तो कई बार पूरी तरह से। इसलिए पहले से ही कार्ययोजना बनाने की जरूरत तो है लेकिन वैकल्पिक योजना का साथ होना और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। मिसाल के लिए, उपरोक्त मिस्र प्रसंग को सातवीं कक्षा हेतु पाठ योजना के सन्दर्भ में लें, हमें यह समझ में आ सकता है कि जो बात आप करना चाहते हैं उसके बारे में विद्यार्थियों की जानकारी बहुत कम है – उन्हें शायद यही पता न हो कि ये 'कॉमन इरा' क्या बला है, सो जैसे ही आप उन्हें उस काल के बारे में बताना शुरू करते हैं तो आपको लग जाता है कि उन्हें तो ग्रेगरी कैलेण्डर, ईसा पूर्व समय आदि के बारे में भी नहीं पता। ऐसी सूरत में, एक तरीका तो यह हो सकता है कि बातचीत को सातवीं कक्षा के स्तर के मुकाबले बहुत निचले स्तर पर ले जाते हुए विद्यार्थियों को 'समयरेखा (टाईमलाईन)' की अवधारणा समझाई जाए। फिर उस पर अभी हाल की प्रमुख घटनाओं से शुरू कर अतीत में पीछे की तरफ जाते हुए तमाम महत्वपूर्ण प्रसंगों को अंकित किया जाए। इसके बाद जाकर बच्चों को अपनी चर्चा में शामिल किया जाए और इस तरह उन्हें इस बात का अहसास कराया जाए कि हजारों बरस पहले प्राचीन मिस्र में स्थितियाँ कैसी थीं। जबकि कुछ स्कूलों में बातचीत का यह स्तर, तीसरी कक्षा के विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त हो सकता है! इन्हीं बातों के चलते ही एन.आई.ई. सलाहकार का काम रोचक और चुनौतीपूर्ण हुआ करता है।

इसके उलट, किसी स्कूल में हमारा सामना इन मुद्दों से पूरी तरह से परिचित विद्यार्थियों से भी हो सकता है। ऐसा स्कूल एक अभिजात स्कूल भी हो सकता है जहाँ के विद्यार्थियों को न केवल कक्षा में तकनॉलॉजी सुलभ हो जाती है बल्कि उनके घर का माहौल भी उन्हें विषयवस्तु की अच्छी–खासी जानकारी उपलब्ध करा देता है। ऐसी स्थिति में, मुद्दे पर एक सार्थक बातचीत करने के लिहाज से एन.आई.ई. विशेषज्ञ के लिए एक ताजा परिप्रेक्ष्य व वैकल्पिक विचार लाना जरूरी हो जाता है। दरअसल,

इन्हीं परिस्थितियों के मद्देनजर ही एन.आई.ई. विशेषज्ञ को अपना 'सुबह का फटाफट होमवर्क' जमकर करना पड़ता है। एन.आई.ई. एक्सपर्ट के लिए इससे ज्यादा शर्मनाक बात कोई और नहीं हो सकती कि वह अपनी पूरी तैयारी के साथ कक्षा में जाए और यह पाए कि निर्दिष्ट विषय पर विद्यार्थियों का ज्ञान उससे बढ़कर नहीं तो कम से कम उस जितना तो है ही।

कई एन.आई.ई. विद्वानों द्वारा किया जाने वाला एक दिलचस्प प्रयोग था अपनी चर्चाओं में विभिन्न विषयों को एक–साथ गूँथना। खुलासे के लिए, चलिए अपने उसी मिस्र वाले विषय पर बने रहते हैं। इतिहास का एक विशेषज्ञ होने के नाते अगर मैं तकनीकी रूप से भूगोल व नागरिकशास्त्र जैसे सामाजिकविज्ञान के अन्य विषयों में पढ़ाए जाने वाले पहलुओं को अपनी चर्चाओं में शामिल नहीं करूँगा तो मैं एक अच्छे खासे अवसर को अपने हाथ से गँवा रहा होऊँगा। मिसाल के लिए, मिस्र को ही लें। एक तरफ भूमध्य सागर की परिधि पर स्थित होने के कारण पानी के जरिए यूरोप से जुड़ने और दूसरी तरफ रेगिस्तान के सहारे अफ्रीकी महाद्वीप से जुड़ा होने के उसके ये दो विशिष्ट भौगोलिक दिशांक, उसके इतिहास में स्वेज नहर से जुड़ी हालिया घटनाओं से लेकर क्लिओपॅट्रा और सीज़र की त्रासद कथा सरीखी रोमन तथा मिस्री शासकों से सम्बन्धित विभिन्न घटनाओं से जा जुड़ते हैं। ठीक इसी तरह, तानाशाही पर चर्चा के दौरान शासन के विभिन्न स्वरूपों तथा शासन के लोकतांत्रिक प्रादर्शों पर भी बातचीत हो सकती है ताकि विद्यार्थी अपने ज्ञान को एक गहराई देते हुए उसे भलीभांति खंगाल सकें। नतीजतन, कुल मिलाकर ऐसे नए–नए परिप्रेक्ष्य उभरकर आ सकते हैं जो खालिस इतिहास पर टिकी बातचीत के द्वारा उभर नहीं सकते थे।

अपने इन अनुभवों से मैं कई सबक ले सकता हूँ। मुझे विश्वास था कि मेरे व्याख्यानों ने मेरे विद्यार्थियों पर एक चिरस्मरणीय प्रभाव छोड़ा है और मेरे इस विश्वास की पुष्टि होती, जब भी मेरा कोई विद्यार्थी (जिसे मैं निश्चित ही भूल चुका होता) या किसी स्कूल का कोई कर्मचारी (जो प्राय: मेरे व्याख्यान सुनने के लिए मेरी कक्षाओं में आकर बैठ जाता) न केवल मुझे एन.आई.ई. टीचर के बतौर पहचान लेता बल्कि कई बरस पहले लिया गया मेरा वह सत्र भी उन्हें याद रहता। अब यदि वयस्क और अवयस्क दोनों ही मस्तिष्कों पर केवल एक ही सत्र में ऐसी अमिट छाप छोड़ी जा सकती है तो सवाल उठता है कि एक नियमित शिक्षक के बतौर हम लगातार ऐसी ही अमिट छाप भला किस तरह छोड़ सकते हैं। इसका जवाब हमारे उन असाधारण अध्यापकों की तैयारियों में निहित है जो अध्यापक अपनी सच्ची लगन, कड़ी मेहनत, रचनात्मकता और विद्यार्थियों के प्रति अपने अपार स्नेह के बल पर अपने विद्यार्थियों के साथ जुड़ने से पहले बस उन्हें समझने भर के लिए ही अतिरिक्त समय लगाते हैं। मुझ जैसे एन.आई.ई. विशेषज्ञों के लिए बस यही गुर काम आया। क्लास शुरू होते ही जितनी जल्दी हो सके यह ताड़ लेना कि विद्यार्थियों को क्या पता है और क्या नहीं, और इसके बाद उनकी पसन्द–नापसन्द के हिसाब से उनके साथ अपनी बातचीत को आगे बढ़ाते जाना।

एन.आई.ई. विशेषज्ञों के लिए कड़ी मेहनत इस रूप में बनी रही कि हमारी आधार सामग्री निरन्तर परिवर्तनशील थी। यहाँ कोई यह कह सकता है कि अगर यह चुनौती न होती और पाठ्य–पुस्तक जैसी अपेक्षाकृत स्थायी सामग्री का उपयोग अगर स्वीकृत होता तो हम विशेषज्ञ पहले से ही तैयारी कर सकते थे और इस समूचे कार्यक्रम को और भी बेहतर ढंग से चला सकते थे। लेकिन सफल विशेषज्ञ अन्तत: वे ही रहे जिन्होंने इस कठोर परिश्रम के बल पर चुनौती को एक सुनहरे अवसर में बदल दिया, और वह भी कुछ इस अन्दाज में बदला कि बाकियों को लगा मानो दैनिक समाचार पत्र को शैक्षिक सामग्री बनाने से पढ़ाना कुछ आसान हो जाता है। 'मृत' अतीत का निर्वाह करने वाले मुझ सरीखे 'इतिहास' विशेषज्ञ के लिए सामग्री के रूप में दैनिक समाचार पत्र का इस्तेमाल एक

सन्दर्भ में तो बड़ा ही सहज रहा आया – बिना अलग से समझाए, विद्यार्थियों को स्वत: ही यह समझ आ गया कि जिस 'अजीवित' अतीत से उनका पाला पड़ा है उसकी प्रासंगिकता एकदम सामयिक है, जीवित है!

तिस पर तुर्रा यह कि जो चीज एन.आई.ई. विशेषज्ञों के लिए अनिवार्य है वह चीज बाकी सभी शिक्षकों के लिए एक 'विकल्प' के बतौर खुली है। फिर वे चाहे किसी भी स्कूल में क्यों न पढ़ा रहे हों, कोई भी पाठ्यक्रम क्यों न अमल में ला रहे हों या फिर किसी भी स्तर के विद्यार्थियों को क्यों न पढ़ाते हों। तो अगली बार अपने श्रोताओं के साथ संवाद के लिए एक अखबार को सामग्री के बतौर इस्तेमाल करने के बारे में क्या ख्याल है आपका जनाब?

__ऋषिकेश__ वर्तमान में अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के 'इंस्टिट्यूट फॉर असेस्मेण्ट ऍण्ड अक्रेडिटेशन' से सम्बद्ध हैं। गुजरे दस सालों में वे शैक्षिक अनुसन्धान, अध्यापक प्रशिक्षण, संस्थागत मूल्यांकनों के अध्यापन व आकल्पन में संलग्न रहे हैं, जिनमें से आठ साल फाउण्डेशन के साथ गुजरे हैं। जे.एन.यू. नई दिल्ली से भारतीय इतिहास में स्नातकोत्तर उपाधि लेने के बाद वे बंगलौर में टाईम्स ऑफ इण्डिया के एन.आई.ई. कार्यक्रम से जुड़े। इसके चलते बंगलौर शहर के 100 से भी ज्यादा स्कूलों के विद्यार्थियों के साथ उनका सार्थक संवाद बना। उनसे rishikesh@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। __अनुवाद__ : मनोहर नोतानी